MR. SPEAKER: The hon. Member is making a speech.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: I am not making a speech. . .

MR. SPEAKER: At least it is not a question which he is asking.

SHRI H. R. GOKHALE: It is a suggestion and I shall bear it in mind.

MR. SPEAKER: At least it is not a question which he is asking

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: May I know whether in order to encourage the production of ayurvedic medicines, proper encouragement will be given to the State Governments which are engaged in this work, and if so, whether any additional allotments have been made in this regard?

SHRI H. R. GOKHALE: With regard to production, every proposal for the manufacture and production of medicines including the particular type to which the hon. Member has referred is examined on a technological basis and only then this question whether certain medicines ought to be encouraged or not is decided, and I am sure that even these medicines are taken into consideration.

श्री चन्द्रिका प्रसाद: माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूं क्या विदेशों में आयुर्वेदिक औषधियों की मांग है और उस मांग को बढ़ाने के लिए आप क्या व्यवस्था कर रहे हैं? दूसरे जो आपने कहा कि आयुर्वेदिक औषधियों को प्रोत्साहन देंगे तो कितने वर्षों में देश आत्मनिर्भर हो जायेगा ताकि वह निर्यात कर सके?

SHRI H. R. GOKHALE: The very fact that in the country also if we compare with allopathic production, the demand for ayurvedic medicines is comparatively small would show that to that extent, the demand for ayurvedic medicines or other indigenous systems of medicine is also less in foreign countries.

उड़ीसा के समुद्री तूफान से प्रभावित क्षेत्रों के लिए विदेशों से तथा अन्य स्रोतों से सहायता

+

* 914. डा० संकटा प्रसाद :

श्री चिन्तामणि पाणिग्रही :

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उड़ीसा के समुद्री तूफान से प्रभावित व्यक्तियों के लिए विदेशों और अन्य स्रोतों से कोई सहायता प्राप्त हुई है;

(ख) यदि हां, तो अब तक कितनी सहायता प्राप्त हो चुकी है; और

(ग) उक्त सहायता को किन-किन मदों पर खर्च किया जा रहा है?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): (a) Yes, Sir.

(b) It is estimated that the value of relief material distributed by UN Agencies and International Voluntary Agencies in Orissa in connection with cyclone relief is about Rs. 3.75 crores. Apart from this a cash donation of Rs. 2 lakhs Norweign Kroners (equivalent to Rs. 2.2 lakhs) has been received from the Government of Norway and a contribution of Rs. 1.90 lakhs to the Prime Minister's National Relief Fund has been received from the U. S. Government.

(c) The items include cereals, milk powder, high-protein processed food items,

biscuits, cooking oils, medicines, tents, tarpaulins, clothes and blankets

डा० सकटा प्रसाद : अध्यक्ष महोदय, उड़ीसा में इस साइक्लोन से जनधन की बहुत हानि हुई है मैं जानना चाहता हूं इस सम्बन्ध में सरकार कौन कौन से कदम उठा रही है जिनसे ऐसी साइक्लोनिक घटनाओं का मुकाबला मजबूती से किया जा सके ?

MR SPEAKER : The main question relates to whether any assistance from foreign countries and other sources has been received, and the hon Member is covering himself under the phrase 'other sources'.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN : This is certainly a general question which normally would require constant study I think these steps are being considered

भारत पाक युद्ध के दौरान शहीद हुए जवानो की स्मृति से प्रतिमा स्थापना तथा स्मारक ग्रंथ का प्रकाशन

*917. श्री शंकर दयाल सिंह : क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या हाल ही में भारत-पाक युद्ध के दौरान हुए जवानों की स्मृति में प्रतिमाएं स्थापित की जाने की कोई योजना सरकार के विचाराधीन है, और

(ख) क्या जवानों के शौर्यपूर्ण कार्यों के प्रचार हेतु एक स्मारक ग्रंथ प्रकाशित करने की भी कोई योजना सरकार के विचाराधीन है ?

रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य मंत्री (श्री विद्याचरण शुक्ल) : (क) हाल ही में भारत-पाक युद्ध के दौरान शहीद हुए जवानों की स्मृति में प्रतिमाएं स्थापित करने की कोई योजना सरकार के विचाराधीन नहीं है। लेकिन अमर ज्योति नाम से एक अस्थायी युद्ध स्मारक इण्डिया गेट के मेहराब के नीचे बनाया गया है। स्वतन्त्रता के पश्चात युद्ध में वीर गति प्राप्त किये सभी सैनिकों के लिए दिल्ली में एक स्थायी युद्ध स्मारक (अमर जवान) बनाने का एक प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है।

(ख) सरकार के पत्रकारों, प्रसारकों और प्रकाशकों को पिछले युद्ध पर जवानों के वीरतापूर्वक कार्यों का उल्लेख करते हुए पुस्तकें अथवा पत्रिकाएं प्रकाशित करने के लिए उपयुक्त सुविधाएं दी हैं।

श्री शंकर दयाल सिंह : अध्यक्ष जी, किसी देश का इतिहास उस की प्रेरणा का स्रोत होता है और इतिहास केवल स्तिथियों का नहीं हो कर बल्कि उन व्यक्तियों का होता है जो इतिहास के साथ-साथ अपने को न्योछावर कर देते हैं। क्या मैं मंत्री जी से जान सकता हूं कि 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही आखिर निशां होगा", इस के लिये क्या सरकार पुनः विचार करेगी कि ऐसे वीरों, शहीदों की प्रतिमायें जहां तहां स्थापित की जायें ?

श्री विद्याचरण शुक्ल : अध्यक्ष महोदय, स्मारक को क्या रूप दिया जाय केवल इस का सवाल है। स्मारक बनाने के बारे में कोई किसी प्रकार का भेद नहीं है। उस की प्रतिमाओं के रूप में रखा जाय या कोई दूसरा स्मारक दूसरे ढंग से बनाया जाय, सवाल यह है। और हमारा इरादा है कि बहुत से जो हमारे देश के कलाकार हैं, आर्किटेक्ट्स हैं, और जो इस तरह के कामों में रुचि रखते हैं, उन सब से या तो कोई प्रतियोगिता आयोजित कर के कुछ इस ढंग